

आशा मन्त्रकाथि

2101

ASHA ARCHIVES

अथपाराशरवृत्तीना ॥
हरिरत्नतन्त्रेणोद्यमः ॥

309
Pandava
Gita

श्रीपा

श्रीगणेशाय नमः॥ ॥ पाण्डव उवाच ॥ प्रह्लाद तारद पुरा शरपुण्ड्र
का व्यासाभ्यर्चयिष्यु कसौ त कभीष्मकाद्या ॥ रुक्मांगदाजुनवशिष्ट
विभीषणाद्याः सुतानहं परमभागवतांतमामि ॥ अस्यार्थः ॥ पाण्ड
व उवाच ॥ यस्तो भारत सका पट्टि कुरुक्षेत्रमा प्रह्लाद तारद पुरा स
रपुण्ड्री क व्यास अभ्यर्चयिष्यु कसौ त कभीष्म रुक्मांगदः अर्जुन व
शिष्ट विभीषणा येति वसी भारत महं सोर्गो ह न्या भया काथा दु
मा सर्वे जमा भै क न पाण्डव गीता भने को शास्त्र प्रक्षांत गर्ना क न सर्वे ले
स्तुति गय्या ॥ ॥ वाला महर्षिणा उवाच ॥ धर्म विवर्द्धति युधिष्ठिर कीर्त्तनेन

मडव

९

हो ५

यार्थ पुरा त्यतिर को दरकी ननेरा शक्र विन त्याति धनीः
जय कृत्तनेराः मादिलु लौ कथय तां न न वति रोगा ॥ ॥
अश्यावा युधिष्ठिर लको नाम लेया अमा वति होलाः जिम
लेन को नाम लेया याया ताति को होलाः अर्जुन को नाम ले
या लक्र को नाम ले होलाः न कुरु स ह देव को नाम लेया निः
लोनि होला ॥ ॥ प्रह्लाद उवाच ॥ ये मा न वा वि ग न रा य रा य र
शाः नाराय न लुर गुरु स ल लं श्म र तिः ॥ ध्याने रा त रा हः
त कि लि अचे त ना सोः ॥ मा लु प यो न र र स न यु न पि व न्ति

श्री या

॥६॥ ~~अर्थात्~~ कीर्ति धर्म वं न चया या य म न्न न न्याः रुतै
नः नय न न्ने परमाधि जालाः सुरगुरु नारायण को नामंदि
नयति स्मरेनाः ध्या व न ग लान क्रील को क्री दोर या व न
या य निः दुः ख नाश हो ला म रु ना रि को ग ई वा ल हि दे नाः
॥ ॥ इति उवाच ॥ नारायणो नाम नरो नराणां प्रसिद्ध वीर
क विनयु धि क्षीः ॥ अने क ज म्मा जि त पा य ल व र्य रुर त्त्य
से र्ब स्म त मा न्न रे यं ॥ ५ ॥ ~~अर्थात्~~ क से ले ना राय सा को
ना मो यो य धि माः सु पा न्न म नु ष्य लेः नि श्च य ग रिः ता रा

सु व

२

य न को स्म र सो ग ए यं क राः अने क ज म्मा हा अने क पा य
ग ल्या को ल वे ना श हो राः रु रि को ना म रि याः नि श्च य ना रा य ता
स नु रु रु रु रुः रे स्ता क्क म ना रा य न को न क्क गं नु लि ष ले ॥ ॥ ~~य~~
~~ठा के र उवाच~~ ॥ मे घ स्था म वि न को ले रा वा र्म श्री व त्सा र्क को रु
नो डा लि ता र्म ॥ पु रा य ये त पु रा रि का रे ता वेः वि श्रु व दे ल व ले
कै क ना र्थः ॥ ६ ॥ ~~अर्थात्~~ ॥ मे घ ज स्तो का ले व रा वि न व रा ला यी
व र्म क रु रि म नि म रा को मा ला ला ई पु रा य ल रि र क म र य न्न ज
स्तो ने व त्रि नु व रा का ना र्थ रे स्ता य र मे श्व र ना रा य न को न म

श्रीया

स्कार ॥ ॥ जीमसे न उवावा ॥ जलो घम ग्ना शयरा यरा ध
ला विमान को द्या वि लविश्व मुर्तिनाः । समुद्र ता य रा यरा
हुरु यिशां तमे श्वयं न गवान न्यु सिदलुः ॥ १ ॥ अथार्थ
॥ जीना विष्णु ले वारा रु को अवतार लि कज हिर गया क्षे दे
त्य मो चन गे सार या ता ल पृथि धु नुवा न ले उवा लि स्या याः
उने विष्णु ले म कन दया य स दुं नुवा हिं हः ॥ ॥ अ न उवा
वा ॥ अविश्व मय क्त मज नम ययः वि भुं य नुं ना विन विश्व
जा वनः त्रै लो क्य विस्तार विद्या लकार कः रु हि ष्य य न्नो लि ग

एव

तिमहात्मनीः ॥ ८ ॥ अथार्थ ॥ विष्णु को विंशत जा गर्तुः महा लौं ग
को हः य कन नया के दे अ न न्नरु य के दे गो विद रूपः के दे के
स व रूप क्ष ना क्ष ना मा नो नारु य भारं रा गे रा याः पु नु कार मा य
नी ना नारु य ग भार रा या ग न्याः पु नु कार मा य नी ना नारु य गरि
व र्था त्रै लो के को विस्तारु रि को सा धु स र्जन के ग लि दि न्याः
रे स्म रु रि को शर रा रु व सः ॥ ॥ न कु लो उवा वा ॥ यदि ग मन
म व रता त्काल या सा नु व भा तः यदि द कु ल वि रु ने जा य ते य
क्षि की टेः रु मि श त म पि ग त्वा ध्या य ते चा त्तरा त्त मि म न व नु

श्री पा

हृदिस्था के शिवे नक्ति रेकाः ॥ ८ ॥ अर्थात् कदाचित् पुनर्जन्म
 को पाय ले नक्ति रेका नो गहोलाः तस्य हेयर मे श्वर मेरा
 हि हृदयमा यचु वसुः मय कनक्त हो ॥ ॥ लह देव उवावा ॥ त
 स्य जज्ञ वराहस्य विष्णो रतुर ले जसः पुनामय पु कुर्वतिः तेषाः
 मपि नमो नमः ॥ ९ ॥ अर्थात् ये हि ते जं स्वरि जज्ञ वराह को नम
 स्कार गरीय हि नमस्कार हो ॥ ॥ कु लु उवावा ॥ स्वर्कर्म फल
 निर्दिष्ट यां यां यो नियजाम्यहं ॥ तस्यो तस्यो हृषिकेश त्वयि
 नक्ति हृ हो सुमेः ॥ १० ॥ अर्थात् आक्र कर्म को फल विचार

एवमि
४

गरी कलाः को ना जात मान नहुं छ त स्वाउमा त हायनी विष्णु
 नक्ति गर्नुः ॥ ॥ मार्कण्ड उवावा ॥ हृ स्मेरला कृष्ण मनु स्मरे
 तिरात्रो त कृष्ण पुन स्थिता येः ॥ ते जित्ते देहा य विलसति कृष्ण
 हरे रथाम न्द्र कुत कुता तेः ॥ ११ ॥ अर्थात् कसे ले श्री कृष्ण ला
 श्री यो प्रिति संग जावर्गलाः सत दिने सुत्रा मायनीः उचमा माय
 नि पर मे श्वर को नाम सम जिथान नक्त गर्लाः तस्य नुष्प कनः
 तो हो होला जसो गरी जज्ञ माः हो मंग द्यु यग्न ह तसो गरी
 पाय यनी यग्नी जाला सत्य सत्य हो ॥ ॥ डोय उवावा ॥ कीं टे

श्री का

सुपं श्री सुमने पुशरि मये पुः रक्षे पि शास्त्र मनुजे सविजत्रः
तत्रः जातस्य मे जव लुके शवलेन्य सादाः त्वय वचन क्रिरवला
व्यजियाली गिता ॥ १२ ॥ अथार्थ ॥ हे परमेश्वर श्री कृष्ण मक
न कीट यलेग विरराक्षे स चि शवि मनुष्य आदिः जा हा जा हा
ज स्म हो ला ता हा ता हा जीव यगरी ज्ञान ले लुग वर रा मा यु
संन जया जा वलः ॥ ॥ सुं ज डो उ वा वा ॥ हे को वि कृष्ण स कृत
य रा मो द शो स मे धा व न ये न लु स्य ॥ द सा स मे धी पु न रे ति
ज न्मा कृष्ण पु रा मी न पु रा न का य ॥ १३ ॥ अथार्थ ॥ न ल्म लु स्य

रा मु मि

५

ले श्री कृष्ण को य नाम नोः तस्म लु स्य क न द शा स मे धी जज्ञ ग सा रा
य नीः र्था रा मु व गी ता या व गरीः गो वि न्द को न ज न ग सा व दी पु रा म
कृः पु व ले गो वि न्द को न ज न छा दि र्य श दान ति ये ज्ञान ग नु न छ
गो वि न्द न ज न स क्था हे रे पु रा म कृः ॥ द सा स मे धी जज्ञ ग सा क न
के रि ग न वा ल छे न ॥ ॥ गो वि न्द गो वि न्द र वा ग यो ने गो वि न्द गो
वि न्द न मा मि नि त्थ ने गो वि न्द गो वि न्द हे रे पु रा लेः गो वि गो उ
मु कू ड कृष्णः ॥ ॥ अथार्थ ॥ हे गो वि न्द हे हे रे हे मु रा रे
हे मु कु न्द हे कृष्ण व क ध र ति श्वा व र रा को दि न य ति नि दान
त पा यिका

श्रीया

॥ यात्रिका सनियमा वस्यामा यादोमा यरमानयाः दिनयुतिं त
मे नमस्कारगत्या को छः यतो भस्म विचारगरिकं न हेयरमे
श्वरः तमा यरहामा नमस्कारः संतुष्टं नु होलाः ॥ ॥ संजयउ
यावा ॥ आता विषया शिवि लाश्व जीता घोरेषु व्याघ्रादिषु व
र्तमानाः ॥ संकृते नारायण शयमानः विमुक्त दुःखा सुखि
नो नवतिः ॥ अर्थार्थ ॥ कोहि मनुष्य दुःखी आरस्य विद्यति दु
ःपर्याका कनः रोगी नया यनीः हरिको नाम लिखा ये श्री दुःख
त्यक नास नै लुषि होलाः ॥ ॥ अकुरु उवाच ॥ अहं स्मि नारा

१२

शुभ

यरादासदासदासत्यदासत्य चदासदासः अन्य च रस
जतो नराणां तस्मादहं न्यतस्मि लोके ॥ २० ॥ अर्थार्थ
॥ हे नाराय मजं प्रावरण का दास उरको यनी दास दुःखः म
लार्गति वं कुरु वल धन्य २ मेरो नायः तया त्रिका वल
रा को दर्शन पाउ नोः ॥ ॥ विदुरु उवाच ॥ या सुदेव स्या यन
को शांता स कृतमानसाः ते स्वीद्य सत्य द शो हं नवे जन्म
त्रिजगतिः ॥ २१ ॥ अर्थार्थ ॥ देवि जन्म क का व स मा र ह न्या
ः श्री कृष्ण त प्रावरण को दास दुःखः ॥ ॥ निष्ठा उवाच ॥ विष

श्रीया

रितेषु कालेषु परि क्षीणेषु वंधुषु त्राहि मां कृपया कृष्ण
सरणागतवत्सलः ॥ २२ ॥ अथार्चः ॥ हे कृष्ण जो विघ्निकार
माः नो विंधु कृत्वा का समयमा ज्ञायावरणमा क्षामा गुरुं वा
हिं हः ॥ दोषो न याव ॥ ये ये हस्त ताव क्रध रे न देत्या त्रैलोक्य
कृत्वा जे न ज नो दने न ते ते गं विष्णु पुरी प्रयांतो क्रोधां विदेव
वरेणानुत्थं ॥ २३ ॥ अथार्चः ॥ गोयनि नाम मया को देत्य वि
ष्णु ले मा त्थारः उक्को यनि स्वर्ग वा स न यो विष्णु को धरे मा स्या
यनि वरदान दिया ज तो नू यो न निः यत्ता यर मे श्वर मे श्वर

सुमि
८

कृष्ण को वारम्बार नमस्कारः ॥ ॥ कृष्ण चार्थ उवाच ॥ मर्द्धम फ
ल मि दं मधु कैट जारे मत्प्रा र्थ नियम दनु ग्रह रेव रेवः ॥ त्व इ
त्य नृत्य परिचारक नृत्य नृत्य नृत्य त्व नृत्य इति मार्ग र लो कना
थं ॥ २४ ॥ अथार्चः ॥ हे मधु कैट जार यर मे श्वर ॥ जा हा जा हा हा
मे ज न हो ला ओ हा ओ हा ज प्रा यरणां र ले कृपा रा प्र हो ला ऐ ति
आस मा हा हा मि छौ हे यर मे श्वर ॥ ॥ अथार्चः ॥ मा उवाच ॥ गो वि
न्द के श व्र ज नार्दन वा सु देव विश्व शे विश्व मधु सु दन विश्व रु
पः ॥ श्री य म ना न पुरु षो त्त म यु स्कराक्ष नारायण युत नृ सि

श्री वा

हृन्मो नमस्तैः॥ २५॥ अथार्था॥ हे गोविन्द केशव जगन्मूर्ति
वासुदेव मधुसुदनः विश्वरूप यन्मनेन नारायणः अयुतः नृसिं
हवारंवारं तया ईकावरणमा कौटि २ नमस्कारः मेरो उच्चारणं
वाहिंछा॥ ॥ कस्तुतवाय॥ नान्यदामिन्नमृशोमिन्नविंश्यामि
नान्यस्मरामि नमजामि नयाश्रयामिः। नम्यां त्वदियवरणां पु
त्रमादरेण। श्रीश्रीनिवांस पुरुषोत्तम देहि दास्यः॥ २६॥ अथार्था
॥ हे पुरुषोत्तम विष्णुः मलायी तयाश्रिकावरणको दासगरी
राशु हवसः। तयाश्रिकावरणार वृद्धको सेवागर्ह॥ मेरो उच्चार

सुध

रगर्भुहवसः॥ ॥ धृत राक्षुतवाय॥ नमो नमो कारण वामनाय
नारायणाय मिलविक्रमाय श्रीसकलकासिगदाक्षराय॥ नमो
सुतसौ पुत्रोत्तमायः॥ २७॥ अथार्था॥ नोयुत्तया ईकावरणमा
नमस्कालगस्याय नावरेः वावरणरुजै नो नारायण त्रिविक्रम
रूपधरं नृसिंः सारं मगदायक धारणाय गणाय ये सापुरुषो
त्तमको वारं म्मो नमस्कारः॥ ॥ धायायुवाय॥ त्वमेव माता वयि
मा त्वमेव त्वमेव वंशुश्च सखा त्वमेव॥ त्वमेव विशादुयिन त्वमे
वः त्वमेव सव मम देव देव॥ २८॥ अथार्था॥ हे प्रभु देव देव मेरो

गा ३

सवैकर्मतयात्रिहोपितामाता न ईव भुसनि दाजु नाया वि
 डाडय सवैतयात्रिहो मकन उडगिरी व कं नु ह्य रुः ॥ १ ॥ २
 द्युन दो न उवा ॥ यज्ञसा युत गोविन्द माधवान न के सवः ॥ क
 श्रीवा ह्मविष्णो ह्मि केश वासुदेवनमोस्तुतेः ॥ अस्यार्च ॥ २२ ॥ हेय दग्नी
 नानन्द माधव अनन्त केशव श्रीकृष्ण ह्मि केशव वासु
 देव रेस्तां परमेश्वर कन वारं वरि नमस्कारः ॥ ३ ॥ जय इ थ
 उवाच ॥ नमस्कृन्माय देवाय प्रह्मणे न तशक्त्या योगेश्वरा
 य योगाय त्वाम ह्म सरणा गंतः ॥ ३० ॥ अस्यार्च ॥ हे कृष्ण उड

स्वरुचः परब्रह्म अनन्तमुक्ति योगेश्वर योगेश्वरुचः तया ॥
 त्रिकोवरणामा नमस्का ॥ वकणे उवाच ॥ कृष्ण य वासुदेवा
 य देवकी नन्द नायकः ॥ नन्द गोपकुमार राय गोविन्दाय नमो
 नमः ॥ ३१ ॥ अस्यार्च ॥ हे श्रीकृष्ण वासुदेव देवकीयाकायः
 नन्द कि नन्द गोकुमा राजे न्या ॥ राम कृष्ण गोविन्द नन्या
 तयात्रिहोः हे परमेश्वर वारं वाल तयात्रिको नमस्कारः
 ॥ ॥ सोमदत्त उवाच ॥ नमो परमकल्याण नमस्ते विश्व ना
 वनः ॥ वासुदेवाय शानाय यङ्नी ययं नमः ॥ ३२ ॥ अस्या

श्रीक

वर्षा ह्यपरसृष्टवत् परमकल्याणवित्तजावनवास्तुदेवतां
तत्त्वरूपयत्ता कांस्वामितयान्निहो यत्तातयान्निकन को
टि २ नमस्का लक्ष्मि ॥ विरातोवाचा नमो ब्रह्माणे देवाय
गौवास्तुलाहिताय च ॥ जगद्धिनायकृष्णाय गोविंदाय नमो
नमः ॥ ३३ ॥ अथावा ॥ देवास्तुलाका नक्तः देवता गौवास्तु
लाका सन्सारका हिलः देष्टी कृष्ण गोविन्द तस्मात्वरणमान
मस्कारः यजसश्च ॥ ॥ शलो उवाच ॥ अतस्त्रिपुष्यगोविन्द वि
जयस्तु समुत्तम जनमश्च त्रि गोविन्दे नते या विद्यते न

उवाच

११

य ॥ ३४ ॥ अथावा ॥ तयान्नि वा वर्न सये न्निताम्बर वैरु
न्याः अथु तलतयान्निका वरणा माः सवैले नमस्कार गंधः
तप्राणि कन जेय दैन ॥ ॥ बल न दो याय ॥ कृष्ण कृष्ण कृष्ण
लोत्त मगति नागति न विः ॥ संसाराना वमगाना यि ली द्यु
रुषो त्त मः ॥ ३५ ॥ अथावा ॥ हे श्री कृष्ण करुणामय यो संसा
रयाय का समुद्रमा ॥ बुद्धिरह्य का मनूष्य करण गति सति दि
न्या होः ॥ ॥ श्री कृष्ण उवाच ॥ कृष्ण कृष्णोति कृष्णोति यो मील
रति नित्य स जलं नित्याय धाय न नरका दुर्द्ध राम्यं हं ॥ ३६

गीया

॥ अथाथा ॥ जस्य मुखे श्री कृष्ण नमि दिन का दिन यति स्म र
णागरि ना प्ररि न्या कनः ॥ जस्यो गरि पाणि वात मय प्रनति रु
नरै न कंदे विधि वैकुण्ठ वास दि न्याः ॥ ॥ पुनरुच्छ ॥ सत्य
विमि मनुजा स्वयमुर्धवा कु योमी मुकुदन रसि रुजना दनंतिः ॥ पुन
॥ निवजय नु दिन पररोति का ह्य पाषाण कश्चि स ह शा य द दाम्य
नि रु ॥ ३७ ॥ अथाथा ॥ हे लोक हो ज सै मेरो नाम मुकुन्द वैकुण्ठ
रसि रुजना दन न निध्यान गला तस्कन सत्य सत्य ले वैकुण्ठ
वास मिलाः ॥ ॥ इच्छल उवाच ॥ सकल नारायण युक्ता पुमा नु

पुन
१२

कल्य सतत्रयः गंगा दिस वलि र्विषु शाल न वति पुत्र क ॥ ३८ ॥ अथा
था ज सै नारायण को नाम दिन युति जय न्या ला ई प्रसा को द र नि
या न्या के रि गं ॥ दिस वलि र्विषा शान तेति को टि देवता को पुजा
गरी दं र नि या न्या वा हिं यनी ॥ श्री कृष्ण को ध्या व न्ना ग र्था व दौ यु
न्य रु ॥ ॥ मुक उवाच ॥ तत्रैव गं ॥ जस्य ना च तत्र गोदा व रि ति धु
सर श्व ति चः ॥ सद्य नि ति र्था नि व स त्रि तत्र यत्रा च्यु लो हार कथा य
संगः ॥ ३९ ॥ अथाथा ॥ जा हा रु रि क था व वि र हं छे ॥ ता हा गं ॥ ज
मुजा सरस्वती स वै नि र्वा आ र सु नि र हं छे ॥ त व न क उ क रा य वि

जीवा

ननुमिन्ननुः। जमे अयविन्न ननुला तसरायि नरकवास होराः
॥ ॥ यमउवाच ॥ नरकेययं मानेनु जमेन यारि नाधिलः ॥ कित्त्व
यानार्थिलो देव केशव नाशनः ॥ ४० ॥ अस्याय ॥ जमे हरिक
था ऐकवित्तगारि सुन्या तस्करा नरकवा टउधार होला ॥ ॥ ना
रदोवाच ॥ जमाने रिसहृषेष्ट तयो ध्यान संमा धिजाः नरोणा स्त्री
गाया घाशा रुक्मनक्ति प्रजायते ॥ ४१ ॥ अस्याय ॥ कोहिमानुष्य क
नेक्ति गच्छः पायिलाश्नक्ति दुर्देनः पायिसुखमाय रिधन कउना
को इच्छा गच्छः धनलेधमर्मा दुर्देनः रुक्मनक्ति गयामनुष्य मोक्षा दु
ष्टे

सुव
१३

य ४

छालको ऐकजम विन्याय द्वि वदुतै सुखी होला ॥ यो छितिरविः
मुक्ता नीः विषय धनुया यिनि त्वामनु स्मरना नाथ हृदयाना
मुयसयतुः ॥ ४३ ॥ अस्याय ॥ जस्मानुष्य ले दिनयुनि जगत्तु
रुनारं को ध्यानगनु शकन्याकराः निव श्रानगस्या नंदो श्री क
ष्का ध्यानगस्या वेकुतै पुन्य छः ॥ ॥ यमदग्नि उवाच ॥ नित्योत्स
वसदा तेषां नित्य श्री नित्यमगलः ॥ ऐषा हृदि स्थो जगवान् म
गलायन तोहार ॥ ४५ ॥ अस्याय ॥ जस्मानुष्य ले हरिको नाम मं
गलगावला तस्को हृदयमा रुक्मलेवालगच्छः ॥ तस्को हृदयं

मा

मा सधैः आनन्द होलाः लक्ष्मीवर्धि फुल्लः सदैव मंगल होलाः ॥
 ॥ नारद उवाच ॥ तस्मात्तु तेषां कुलं तेषां यत्तु राजयः ॥ येषां मादि
 वरश्च मा हृदयस्थानं नार्दनः ॥ ४६ ॥ अथार्था ॥ जस्तो हृदय
 मा फलफलजस्तो निर्मलश्च तत्का हृदयमादृष्टवत् ॥ तत्क
 ए सदैव जय होलाः ॥ ॥ गौतम उवाच ॥ गौ कोटिदानं गुरुनेष
 कोटि मयः पुण्याणि ॥ तत्कल्यवांसिः ॥ मते सुसमे सुवर्णदा
 नी गोविन्दनामसंस्मरणं न तुल्यं ॥ ४७ ॥ अथार्था ॥ कोटि
 गोदानं गस्याकोः यत्ति को जति पुन्यं ॥ तयो स वै प्रालम्भ

मा

रुव
१५

ले ३

१. उरुयवतजतिगदा

मा गोविन्दजया को वैरो यर पुंराय ॥ ॥ अग्रादवाचः ॥
 गोविन्देति सदा आर्न गोविन्देति सदा जयः ॥ गोविन्देति सदा
 ध्यानं ॥ सदा ग्यविन्दकोर्त्तनः ॥ ४८ ॥ अथार्था ॥ आनदानं ग
 दायिनि गोविन्दजय जाय यन्मा गोविन्दको गनुः ॥ ध्यानयनि
 गोविन्दको गनुः ॥ सदा सवदा गोविन्द जय सक्या ठेरे पुण्य
 ॥ ॥ त्रियक्षरं परं ब्रह्म गोविन्देति यै त्रियक्षरं ॥ तस्मा दुर्ज
 रितं यरा ब्रह्म पुण्य कल्यते ॥ ४९ ॥ अथार्था ॥ कलैलेन न्या
 त्रियक्षरं पादुकरा उलैले मोक्ष होला गोविन्दका त्रियक्षे

मृषा

रजया दुस्वप्न होराः परलो कडुर्हार होलाः पितृलोक वैकु
ण्ठजारात आ फुकन स्वर्गवास होलाः ॥ श्रीवादरावरा उ
वाचा ॥ अयु नवक ल्युष्टो लो अ नत काम भेन वाः चित्तामणि
स्य गोविंदो हरिनामै विविनयेः ॥ ५० ॥ अस्या च ॥ हे अयु न
क ल्युष्टो अ नत काम भेन वः हे चित्तामणि गोविन्दः हे ह
रे नमो नमो मलिन्या कन विषय कारमा अ चेत नया य नि
उचे न हो लाः ये स्ता पर मे श्वर को वारं म्बार नमस्कारः ॥ ॥
हरि उवाच ॥ जयं तु यं जयं तु देवो देव किं नन्दनो यं जयं तु

सग
१५

२४

जयं तु रुद्र दक्षि वंशयुरियः ॥ जयं तु जयं तु मेघ स्या म
ल को मला गो जयं तु जयं तु एधि नार नास्य पुं कुंदः ॥ ५१ ॥
अस्या च ॥ हे स वस्वरूपः देवः देवं की की को उधार गण्यः
रुद्र विष्णु सवि मेघ वरा जया काः ए धि को उधार गण्यः
स्या म वरा जै य धि को जय गण्यः ये स्ता पर मे श्वर विस्वरू
प मुकुंद को नमस्कारः ॥ ॥ यि र्थ लाय ज उवाच ॥ श्रीमन्म
रु धि ज वे गरुड य जा यः नाय ज यो यस मजा य व वो ध धा ये
॥ कृष्णाय नमः कृष्ण कज लाग्नि रुज गं रो गा क्ले स य पाय ह

श्रीपा

रय गुरु वेन मलेः ॥ ५२ ॥ अस्या श्री हे श्री कृष्ण राम नरसिंघ
रुपः गरुड वाहनः गदाधारि विद्यायति वदारि यलो स्वरु
य चतुर्बाहु श्री कृष्ण एक ही दृष्टिः सत्य को विष मारि साज
गण्यः के सव हरि जगत का गुरुः ऐला परमेश्वर को नमस्का
रः ॥ रु वि होत्र उवाचः ॥ कृष्ण तदि य यदर्थ क ज चिंजरा ले का
ओ व मे विसलु मा नमराज हंसः प्राण प्रयाण समय क क वांन
धितै कं राव रोधन विधो स्मरन कु त लेः ॥ ५३ ॥ अस्या श्री हे कृ
ष्ण मि ले वनाय को यो चिंजराः ए से चिंजरा मा राज हंस वः

दगी
१६

स्या माः क क वाट पि चले ज्वर नया का समय माः वावा मरु ता
रि दाज्यु नाई दुष्ट मित्र क से ले उधार ग ए शि कु छे नः उद्धार
गण्यति पायि एक हीः हे परमेश्वर ए सा श्री कृष्ण को यारः
स्मारन मस्का ॥ विदुर उवाच ॥ हरि नां मे वना मे वना मे व म म
जिवरा क लो ना ले वना स्ते वः नो स्ते व गरितं नयाः ॥ ५४ ॥ अ
स्या श्री हे परमेश्वर तया हिं त्रिको नमस्कार वरन के आस मा
जीव मे रोखः आ का के आ स छैन तया नि को आस मा जिय मे
रोखः आ का के आ स छैन तया नि को वरणा को न क्रम लाः

श्रीया

त्रिनेत्रेदिदयाराशुहोलाः॥ ॥ वसिष्ठोऽवाच॥ कृष्णेति मंग
लनाम सस्यावाचायवर्ततेः॥ तस्मिन् नवमनुष्याम माहाया
तककोरुयेः॥ ५५॥ अस्याय॥ तस्मन्नुष्यले मंगलवर्णायाः
प्रणिश्री कृष्णको नामस्मरणा कुन्यामंगलं वनाउच्छित्तको
पायसवै नक्ष होलाः॥ ॥ अरुंधत्युवाच॥ कृष्णाय वा सुदेवा
य हरयय रमणोऽय एतत्केशनाशाय गोविन्दाय नमो न
मः॥ ५६॥ अस्याय॥ हे प्राकृष्ण चमिनामलिन्या कृष्ण पायसः
दै कुलिजाकुः तस्मन्नुष्यले हरिकानाम मंगलगावलाः उक्त्वा

दृग
१७

पायसवैः जतो वायुले वादर का र्कः नक्षेयाय नीयनी उदि
जालाः तर्च गोविन्दको नाम वारं चारत्तुः॥ ॥ कंस्योवा
च॥ कृष्णनुस्मरणदेवा पायसं घटयं जुरं॥ शतधा ने दमाः
प्रोति गिरिवज्रहृत्तोयवाः॥ ५७॥ अस्याय॥ श्रीकृष्णको पुणा
मगशाय मनुष्यको पायसं च नागस्याको सवैः॥ तस्मै वज्रलेयव
तखंडं द्रुपदं कुरुः॥ पायनिनक्ष होलाः॥ ॥ दुजोधन उवाच॥ जाना
मियायं नव मेयकृत्तिः जानामि युक्तौ स्मि तच्छाकरोमिः॥ ५८॥
अस्याय॥ गुनगुन कर्म क्राफुले गस्याउ कुच्छः धर्मगस्याय

जानामि युक्तौ स्मि तच्छाकरोमिः॥ ५८॥
जानामि युक्तौ स्मि तच्छाकरोमिः॥ ५८॥

श्रीग

मफलहोलाः पायगत्या पाय फलमिच्छः नो कर्म ह तो हे रि
परमेश्वर श्री कृष्ण रे शुंष दिन्हुं । यस्ता परमेश्वर श्री कृष्ण
को नमस्कारः ॥ ॥ यत्र स्य गुण दोषेण समतां मधु सुदयः ॥
अहं न्री नवानजन्त्रि मम दोषो न दि यंते ॥ ५२ ॥ अस्यान
॥ दोष लाया यनी नलाया यनिः म तया कि कै नरणा माहः ॥
तया नि करण वाल वाल नमस्कारः ॥ ॥ अगु वां ॥ नामेव त
गोविन्द नाम तत्त्व सता धिकं ॥ ददा त्त्वा रणा न्मुक्ति नवा
नवा गयोगतः ॥ ६० ॥ अस्याव ॥ को हि परमा वि लत तो जा

दगी
१८

निकरा गोविन्द को नाम पां एव गीता एक शय आह आवर्त
पाय गरि ध्यान गत्याः अ हो न शय यजु गत्या को पुंन्य होला ॥ ॥
लोम शो वां च ॥ नमामि नारायण पाद पं कजं करोमि नारायण
पुजनं सदा ॥ वदामि नारायण नाम निर्मल स्मरामि नारायण
पुंजनं तत्त्व मयं ॥ ६१ ॥ अस्याव ॥ दिन का दिन नारायण को नि
र्मल नाम लिनुः दिन का दिन नारायण का पाव यत्र को नमस्कार
रगेनु अविस्वास मत्र ले जाय गर्नु ॥ ॥ शौन क उवाच ॥ स्मृते स
कलक स्थानं नोजनं जत्र जायते ॥ पुरुष तमं जन्त्रि न्य बुजाः

श्रीवा

मिशररागिरेहे॥६२॥ अस्वार्थ॥ हरिको नामलिन्याकराः सम
स्त कल्याण हो लोः सुधात्र हो लाः आकु आत्मयिर आत्मा व
रोवरचिक्ताः न्योमनुष्य हरि का सरण माः जालाः॥ ॥ गमं
नउवाचः॥ नारायणोतिमं त्रौस्ति वागस्ति वसवन्निभिः। तथाः
यिनरवो घोरेः यत्तती घनम दुतं॥६३॥ अस्वार्थ॥ कोहिमनु
ष्य वचने हि दे जानी कि दे नारायण जयः मंत्रले जया ला
ई जंक्त वानं नर्क जानुयं देः नारायणः मंत्रज कुन्या मुखरी
नर्क वा सत्रयो जनिक्ता आश्चर्य छः॥ ॥ दाल न्यउवाच॥

६गा
१२

कितस्य वदुनि मंत्रं नक्तियस्य जना दने नमो नारायणाय
व मंत्र सर्वार्थ साधनः॥६४॥ अस्वार्थ॥ जल समनुष्य ले विष्णु
नक्तनगारि अरु सर्व साधना गत्या यतिः॥ आय योजन छ
ः नमो नारायणे नाम विष्णु को दुर सर्व साधन क दु छ अरु मंत्र
जा न्या ले काय योजन छः जानि जन ले ता वि छु के जंक्ति गर्नु
॥ ॥ दे संधाय नउवाच॥ यत्र योगेश्वर कृष्णो यत्र पार्थिवनुः
ईरः॥ तत्र श्रीविजयो नुति कुरवानिति मनिर्ममः॥६५॥ अ
स्वार्थः॥ जा हा जो गेश्वर ना हा कृष्ण जा हा धनुर्धर ना हा

श्रीका

अर्जुन जाह्ला कृष्ण वन्द्य । ताहारा किडुं कृष्ण लक्ष्मी न
या का ठाउमा । स्तिर होला ॥ ॥ अथिरो वाचा । हरि हर निवाय
हि । दुष्ट विनै रवि सिद्धि । अति छयायि सय स्य देह न्ये वहि वा
वक ॥ ६६ ॥ अस्या च ॥ जस्मनुष्य ले मन धिनु गंरि हरि को ना
म जय । उस्को याय सवै नम होइ गां ला ॥ ॥ पराशं यो वाच ॥
लक्ष्म दुष्ट विनै जेन हरि रु न्ये दोर छयः । फट्ट पारि कर लेन मोक्ष
यग म न्युति ॥ ६७ ॥ अस्या च ॥ जस्मनुष्य ले मन धिनु जंरि स
व्य गरित यात्रि को नाम । उई अथर हरि जे नी ज स्या के लाः लं

दगा
२०

भारका याय कोछु लो नदियार गरि सुख ले वैकुंठ जा न्हः ॥
वोल सो वाचा । हे जि के रल सारं के सर्वदा मधुरा युयाः । नारायण
यम युषं यिव जि के निरतरं ॥ ६८ ॥ अस्या च ॥ हे जि को सदा काले
मधुर वचन को लुः । छिचरो नकुः । सदा काले मोर्तद को निमल नो
मलिः । नारायण को नाम ले सु कं मे वैकुंठ नास मि लाः ॥ ॥ व्या
शो वाचा । सत्यं सत्य पुन सत्य । जुज मु न्याय वाचने न वेदा त्रय
रं शा स्तः । न देव के श वाच्य रं ॥ ६९ ॥ अस्या च ॥ विदुरं को वचन स
त्य गरि मानः । ज्ञानि जन ले विष्णु के न कि गर्नुः । विष्णु के नाम जे

श्रीया

याकाशास्त्रपर्वतुसुनुः॥ ॥ धन्वर्तरी उवाच॥ अयुतानन्दो
विन्द नो मोचरणा नैष जानः॥ नश्यति सकलारोगा सत्यसंन
वदाम्यहं॥ ७०॥ अर्थः॥ हे अयुत अर्जुन गौविन्द तयात्रिको
नामलियाकनः धर्मकर्मदानतयस्यां अरुदेवताकोसेवानिर्घ
जानुयहेनः श्रीनारायणकनाममात्रले धर्मकर्म श्रेष्ठप्रिय
निविस्तुको नामलियायहिः पायदुःखरोगसर्ववैकुण्ठिजैवै
कुण्ठवासहोलाः॥ ॥ मां कुरु उवाच॥ साहानिस्तद्वह्निदेः
साचाधज उमुकता यन्मुक्तं अहगधि वासुदेवनवितय

दगा
२१

तः॥ अर्थः॥ जन्ये गरिकन स्वर्गमोक्षे सुरादिन्या जगत्का
गुरुः हरिको विंन जानर्ग एयां लार् क्वागनि होलाः शानिज
लेया एवगीता या रुगरि सधेन के गनु सकुन्याले धरमारा
धि नमस्कारगन्या लायी वदो पुन्यद्वैः॥ ॥ अगस्त उवाच॥ नि
मिष निमिषां ध्वत्वा प्राप्ति र्णा विस्तु वितर्नः कलुषो टि सहस्राः
नि ध्यानमेकं विशिष्यतः॥ ७१॥ अर्थः॥ जस्मलुष्यले विस्तु
कोस्तुति गरिः ध्यान गत्यो॥ उवाच कोटि यज्ञगत्या कोयुन्य
पावलाः॥ ॥ वामदेव उवाच॥ मनसा कर्मनावाचा यस्मै र

श्रीया

तिजनाईन॥ तत्र तत्र कुरुक्षेत्रं प्रयागे मे मिषवनः॥ ७३॥
अस्यार्थ॥ जाजाहा जाहा हरिको कया कुंठः ताहा कुरुक्षेत्रं
त्रययाग जमुना कलायनी सवैतिर्ल सवैगं भकी॥ केदारग
या पुस्करंती तैति सकोटि देवता देवी गणा निमिषारन्य सं
वै॥ आ ईकारा हरिकचा सुत्रिल हंछनः॥ ॥ शुक्लवाच॥ आ
लोका सर्वसा स्त्राणि विचार्ये वं पुन पुनः ईदं मे कसमुत्पन्न
चेयो नारायणा सदाः॥ ७४॥ अस्यार्थः॥ मैले समस्त हेत्या पु
रानयानि सुन्याः विष्णुका ध्यान जति तु लोके हिरहेन छः॥

उगा
२२

ननु च तस्मान्नि ले विष्णुके भक्तिगर्भः॥ ॥ श्रीमाहादेव उवाच॥
शारिरे यं हेरिचुतेया भिरुले केले वले॥ शौषधी जा कवि
लोय वै श्री नारायणो हरिः॥ ७५॥ अस्यार्थः॥ जप्ते विष्णुकोः
ध्यान गरुड शकन्या तः॥ उक्ते शारिर सदानि मलरु न्याः
छः॥ रोगया श्री सवैजां कुंठः वै शयनि विंछुं कुंठः॥ ॥ शौनके
उवाच॥ जो जने छादने चित्ता व बांकु वृत्ति वैछुवाः॥ यो सो
वि स्थं नरो देव स भक्तान् किं मुखक्षते॥ ७६॥ अस्यार्थः॥
जो जने दो मायनि जय विष्णु भनि अर्थन नगरिया न्या

श्रीम

: मनुष्य को जन्म एवा हो: हरिकथा कह: रामा श्री कति रहउ
चिन्तरा श्री मनुष्य जल के जाइ ॥ मनुष्य को जन्म जै क:
न कालिक: विष्णु को न कि नग न्या लाई का उय काल देका
उय कार ले का गति होला ॥ ॥ एवं वेसा दयो देवा अषय
श्वन यो धन: अषय श्वत यो धन: कि न यति सुर अक्ष देव नारा
य रा सदा ॥ ७७ ॥ अस्या र्चा तसर्थ: प्रसाम हे श्वर देव लोक त
यो धन अवि लोक ले: यर मे श्वर नारायण कण अक्ष गरि रा श्री
छन: ॥ ॥ शनकु मारो वाय ॥ यस्या रु ते गदा चक्र गरु दो र्य

दुगा
२३

स्य वा रुन: शस्य चक्र गदाय न स मे विष्णु यति रहउ: ॥ ७८ ॥
अस्या र्चा ॥ ज श्रे शं चक्र गदाय न धारण गरि: गरु द्वा रु
न गरि वष्मा नारायण कण नम स्कार ग न्या: पां राय गीता
यार्थ ग न्या को देह य विन होरा: आयु र्द्वि हो ला: वेद पुन्य
हो ला: धन धान्य कुन्य: पाय ना शि न्या: सा त्रि ग न्या स्तु ति:
हो ॥ ॥ इदं य विन मायूष्य पुन्य पायु पुना यन: जय रैन्या
न रु स्या य ज रा गो दाने व फ ल ॥ अस्या र्चा ॥ वैष्णु को स्तो त्र या
ध गरि क से ले पा रु ग न्या को सु निर रुं कुन: क शो ले पु स क रु

श्री

तुल्या ईश्वर ले श्याय कृपा पुस्तक तुल्या ईश्वर मारा श्या ४
ला ईश्वर ननाई कृपा वरा वरा पुन्य कृपा युग नैरि सदा वर
गन्या को पुन्य होला: एते पुन्य ले रुज्जार गोदान गस्या को
पुन्य होला: रुज्जार लिंग स्थापना गस्या को पुन्य होला: या
पद राउं विष्णु लोक गान्धः ॥ ॥ सर्वपाप विनिर्मुक्तो विष्णु
पुन्य नाशना ॥ धर्मार्थ काम मोक्षार्थ या एवै परिक्रिन्ते
॥ ॥ दाना क्रमार्थ ॥ जप्ते वा एव गीता या रुगैरि न कर्म कर्म त
श्वारत को पुन्य होला: याय सर्व मोचन गरि सत्य सत्य ले

दगा
स्व
२४

वैकुण्ठ जानानः ॥ ॥ ईती श्री वा एव दगीता स्तोत्र समा
प्तः ॥ ॥ गदिष्टं पुस्तकं दिस्ता न्नादिस्त रिषिटं माया
गदिष्टं मशुर्वा मम दोखन दीयते: ॥ शुभं मस्तु ॥ ॥
इदं पुस्तकं भक्त पढन ने गरी नेवासी हरि लसांगामी श्रेष्ठ स्मैदम् ॥

श्रीया

श्रीबालगोपाल
कृष्णजीधारणा



वंदरा

दुगा
२४

जाभा सरु काथि

2101

ASHA ARCHIVES